प्रकाशन की तिथि 01.08.2025

ओ३म्

एक प्रति मूल्यः रू. 5.00

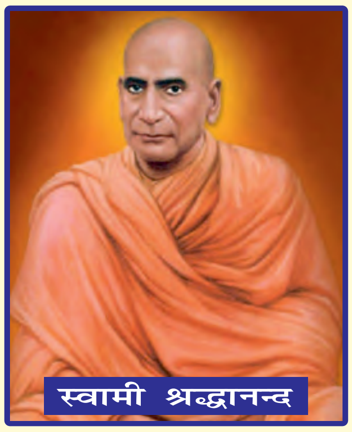
स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 49 अंक 08

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 500 रुपये

अगस्त 2025 विक्रम सम्वत् 2082 श्रावण-भाद्रपद सनातन धर्मी नेता- पं. मदनमोहन मालवीय

मोबाइलः 8368008215

परामर्शदाताः स्वामी सच्चिदानन्द श्री रणवीर सिंह श्री सुभाष चन्द्र दुआ श्री सुरेन्द्र गुप्त प्रबन्धकः श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

धर्म बदलवाने वाले रैकेट का खुलासा, 10 गिरफ्तार

यूपी पुलिस ने अवैध धर्मांतरण के खिलाफ मिशन अस्मिता के तहत बलरामपुर के बाद अब आगरा में एक बड़े रैकेट का भंडाफोड़ करते हुए छह राज्यों से एक महिला समेत लोगों को गिरफ्तार किया है। इस गैंग के सिमी, एसडीपीआई, पी.एफ.आई., आतंकी संगठन लश्कर–ए–तैबा से कनेक्शन के सबूत मिले हैं। कनाडा, अमेरिका और दुबई से फंडिंग की मनी ट्रेल भी पुलिस को मिली है। बताया जा रहा है कि इस गैंग ने हजारों की संख्या में धर्मांतरण कराया है। इस मामले की जांच मार्च में आगरा में तब शुरु की गई, जब 33 और 18 साल की उम्र की दो बहनों के लापता होने की शिकायत दर्ज कराई गई।

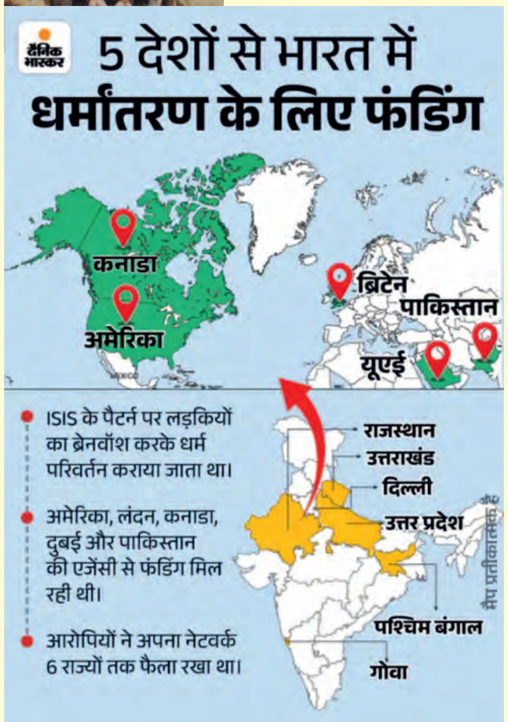

एक रहोगे तो सेफ रहोगे

उत्तर प्रदेश जागरण अखबार के एक पेज पर 7 खबरों में से 6 खबर सिर्फ हिंदुओं के धर्म परिवर्तन की हैं। अब भी नहीं जागे तो खत्म हो जाओगे। हिंदुओं को बाँटने के लिए ही पीडीए जैसे झूठ के पुलिंदा तैयार किया गया है। इसलिए एक रहोगे तो सेफ रहोगे।

'शुद्धि' धारावाहिक-15

(वर्तमान परिवेश पर आधारित एक सशक्त एवं पठनीय उपन्यास)

(गत अंक से आगे) - लेखिका सुधा शर्मा

हमें समझना होगा कि ये हमारे घनिष्ठ मित्र हो सकते हैं, सुख–दुख में साथ दे सकते हैं। लेकिन धर्म के मामले में ये कट्टर होते हैं। धर्म पर आंच आते ही इनके लिए दोस्ती, भाईचारा सब गौण हो जाते हैं। यह जिसके साथ रात दिन रहते हैं। एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं लेकिन अगर धर्म की बात आ जाए तो यह अपने इसी मित्र का अपने हाथों से गला काटने में तनिक भी संकोच नहीं करते यही अहम , यही कट्टरता इनके धर्म की ताकत है।" अच्छा भाई मैं अब चलता हूँ। शाम को अपना बिस्तर लेकर मैं तेरे पास रात को सोने के लिए आता हूँ।कहकर अखिल चला गया । वास्तव में ही दो घंटे बाद अखिल अपने हाथ में एक बिस्तर लेकर आ गया और सलीम के वार्ड के बाहर फर्श पर ही कपड़ा बिछाकर

(शेष पृष्ठ 6 पर)

बरेली की दुनिया खान ने अपनाया वैदिक धर्म

उत्तर प्रदेश के बरेली की मुस्लिम युवती दुनिया ने सनातन वैदिक धर्म अपनाकर हर्षित यादव नाम के हिंदू युवा से विवाह कर लिया है। दानिया खान मांग में सिंदूर लगाए, ललाट पर टीका लगाए दिख रही है। वह कहती है कि मैं बहुत खुश हूं।

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

यूपी के मुरादाबाद में दो
मुस्लिम युवतियों ने अपनाया वैदिक धर्म

कटघर निवासी स्वालेहीन ने इस्लाम को त्याग कर अपना नाम शालिनी रख लिया जबकि भोजपुर निवासी नूर फातमा ने नीलम के नाम से पहचाने जाने की घोषणा की। उन्होंने किसी भी तरह का दबाव न होने की बात कही और बताया कि यह निर्णय उन्होंने स्वेच्छा से लिया है। नूर फातमा, परिवर्तित नाम नीलम के अनुसार भी उनका यह निर्णय पूरी तरह स्वेच्छा से लिया गया है। आर्य समाज मंदिर के अधिकारियों ने भी पुष्टि की कि युवतियों ने धर्म परिवर्तन के सभी औपचारिक कदम अपनी इच्छा से उठाए हैं। शुद्धि उपरांत दोनों युवतियों का दो हिंदू युवकों से विवाह भी संपन्न हुआ।

हिंदू युवती के धर्मांतरण एवं निकाह पर
मुस्लिम परिवार का 3 गांवों द्वारा बहिष्कार

हरियाणा के चरखी दादरी जिले के गांव महराणा में 3 जुलाई को 25 वर्षीय शाहीद ने गांव की ही हिंदू लड़की प्रीति का धर्म परिवर्तन करवाकर निकाह कर लिया था। ग्रामीणों को 6 जुलाई को इसकी सूचना मिली तो मुस्लिम समुदाय के लोगों की दुकानें बंद करवा दी। रविवार को गांव पातुवास में तीन गांवों खेड़ी सनवाल, महराणा और पातुवास के ग्रामीणों की संयुक्त रूप से पंचायत का आयोजन किया गया। वहीं फैसला लिया कि तीनों गांव में लड़के शाहीद के परिवार से कोई सामाजिक रिश्ता नहीं रखा जाएगा। मामले को देखते हुए गांव के आसपास पुलिस बल तैनात रहा। कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से विवाह को औपचारिक रूप से रद्द करने की प्रक्रिया चल रही है। पंचायत की अध्यक्षता कपूर सिंह ने की और संचालन अठगामा खाप के संयोजक धर्मपाल महराणा द्वारा करवाया गया। अठगामा खाप संयोजक धर्मपाल महराणा व पंचायत प्रतिनिधि मीर सिंह ने बहिष्कार की पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि लड़की से निकाह करने वाला शाहीद गांव में नहीं आएगा। तीनों गांव में शाहीद के परिवार से कोई सामाजिक रिश्ता नहीं रखा जाएगा।

पिछले धर्म में लौट आई युवती– दोनों बीच तलाक की प्रक्रिया चल रही है और इस संबंध में एफिडेविट भी दिया गया है। पंचायत में तीनों गांवों के सरपंच, पूर्व सरपंच सहित कई लोग मौजूद रहे। उन्होंने ये भी बताया कि हिंदू युवती ने कुछ समय के लिए इस्लाम धर्म अपना लिया था, ने अब एक हलफनामे में शपथ ली है कि वह अपने पिछले धर्म में लौट आई है।

गुजरात ए.टी.एस. ने किया बड़ा खुलासा
गजवा–ए–हिंद मिशन पर फिर अल–कायदा के आतंकवादी

गुजरात ए.टी.एस ने अल–कायदा की भारतीय शाखा से जुड़े एक बड़े सोशल मीडिया मॉड्यूल का पर्दाफाश करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। ये आरोपी इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के जरिए 'गजवा–ए–हिंद' की विचारधारा फैलाकर देश में हिंसा भड़काने की साजिश रच रहे थे। 10 जून 2025 को गुजरात ATS के डिप्टी SP हर्ष उपाध्याय को गुप्त सूचना मिली कि कुछ इंस्टाग्राम अकाउंट्स, के जरिए देश–विरोधी और भड़काऊ सामग्री शेयर की जा रही थी. ये अकाउंट्स। AQIS से जुड़े आतंकी कंटेंट, वीडियो और विचारधारा फैलाकर मुस्लिम युवाओं को आतंक की राह पर ले जाने और भारत सरकार व लोकतांत्रिक संस्थाओं के खिलाफ हिंसा को बढ़ावा देने का काम कर रहे थे। फार्दीन शेख (फतेहवाड़ी, अहमदाबाद), सैफुल्ला कुरैशी (मोडासा, गुजरात), मोहम्मद फाईक (चांदनी चौक, दिल्ली), ज़ीशान अली (नोएडा, उत्तर प्रदेश), अहमदाबाद, दिल्ली स्पेशल सेल, यूपी। और स्थानीय पुलिस की मदद से चारों आरोपियों गिरफ्तार कर गुजरात कार्यालय लाया गया। चारों के मोबाइल और इंस्टाग्राम अकाउंट्स से भड़काऊ वीडियो, जिहादी कंटेंट, गजवा–ए–हिंद से जुड़े संदेश, काफिरों के खिलाफ हिंसा भड़काने वाली सामग्री और शरिया कानून के समर्थन में पोस्ट मिली पूछताछ के बाद द्वारा कुल 62 अकाउंट्स से जुड़ा डेटा खंगाला जा रहा है। चारों आरोपियों के खिलाफ UAPA की धारा 13, 18, 38, 39 और IPC की धारा 113, 152, 196, 351(2) के तहत मामला दर्ज किया गया है।

–एन डी टी वी से साभार

शुद्धि सम्बन्धी समाचार, सनातन धर्म पर आधारित लेख वट्सअप नम्बर 8368008215 पर भेजें ताकि आगामी अंक में प्रकाशित हो सके। –सम्पादक

हापुड़ में 45 परिवार बने हिन्दू

कहा– खून में है सनातन धर्म, चार साल से कर रहे थे प्रयास

विरोध और चार साल की उधेड़बुन के बाद आखिर सलमान खान और उनके कुनबे के 45 परिवारों ने इस्लाम धर्म छोड़कर सनातन धर्म अपना लिया। सलमान खाने ने धर्म बदलने के बाद अपना नाम संसार सिंह रख लिया है और अपने दादा का नाम रखा श्यामलाल सिंह, जिनका निधन होने पर बुधवार को ब्रजघाट में हिन्दू रीति रिवाज के मुताबिक अंतिम संस्कार किया। इसके बाद उनकी अस्थियों को प्रवाहित कर पहली बार गंगा स्नान कर खुद को शुद्ध किया और सनातन धर्म स्वीकार कर लिया। चूंकि, इन्हें अपना गोत्र पता नहीं था, इसलिए भगवान शिव एवं माता पार्वती के नाम पर गौरीशंकर गोत्र अपनाकर घर वापसी की।

दिल्ली के संसार सिंह (पूर्व में सलमान) ने बताया कि उनका परिवार मूल रूप से इस्लामाबाद (पाकिस्तान) का रहने वाला है। उनके पूर्वज हिन्दू हुआ करते थे, लेकिन मुगलों ने उन्हें मुस्लिम बनने के लिए मजबूर कर दिया था। अंग्रेजों के भारत छोड़ने के बाद देश का बंटवारा हुआ तो परिवार ने भारत में रहने का निर्णय लिया और पूरा कुनबा इस्लामाबाद से आकर दिल्ली में बस गया। इसमें अब 45 से अधिक परिवार है, जिनमें करीब 150 सदस्य हैं। संसार सिंह के मुताबिक सभी लोगों ने करीब चार साल पूर्व इस्लाम र्ध्म को छोड़कर सनातन धर्म को स्वीकार करने का निर्णय लिया था, लेकिन कुछ लोगों के विरोध के चलते इनके परिवार के सदस्य इस्लाम और सनातन धर्म के बीच झूलते रहे। आखिर उनके दादा ने निर्णय लिया कि परिवार के सदस्य अब हिंदू रीति रिवाज के मुताबिक ही व्रत त्यौहार व अन्य संस्कार अपनाएंगे। इसके साथ ही संकल्प दिलया कि निधन के बाद उनका अंतिम संस्कार ब्रजघाट पर करे वंशावली में नाम दर्ज कराया जाए। उनकी इच्छा के मुताबिक संसार सिंह ने उनका अंतिम संस्कार किया। इसके बाद पुरोहित अंकुर शर्मा के यहां परिवार के सदस्यों का नाम वंशावली में दर्ज कराया। मुगल अत्याचार से बने थे मुस्मिल– संसार सिंह ने बताया कि उनके दादा–परदादा के खून में सनातन धर्म के ही संस्कार थे, लेकिन मुगलों के अत्याचार के चलते इस्लाम धर्म अपना लिया था। मुस्लिम में वह धोबी जाति से ताल्लुक रखते हैं। अब उन्होंने अपने परिवार के सभी सदस्यों के नाम बदल लिए हैं। ये लोग अब संजू, सतीश, बलवान सिंह, राजेश, संजय, शशि आदि बन गए हैं।

सुविचार – संसार में रहें कमल के फूल की तरह, छाछ में मक्खन हो तो कोई बाधा नहीं लेकिन मक्खन में छाछ नहीं होनी चाहिए, कोयले में हीरा आ जाये तो कोई बाधा नहीं लेकिन हीरा लेते हुए कोयला नहीं आना चाहिए, जहर में मिलावट हो तो कोई बाधा नहीं लेकिन मिठाई में जहर की मिलावट नहीं होनी चाहिये, पानी में नाव हो तो कोई बाधा नहीं लेकिन नाव में पानी नहीं होना चाहिये। इसी तरह संसार में रहते हुए परमात्मा की याद आती है तो कोई बाधा नहीं परंतु प्रभु भक्ति में संसार की याद नहीं आनी चाहिए।

(स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर प्रकाशित)

भारतीय क्रांति के अग्रदूत – स्वामी दयानंद

– डॉ–विवेक–आर्य

भारत के स्कूलों में पाठ्यक्रर्म र्म में जो इतिहास पढ़ाया जाता हैं उससे सभी विद्यार्थियों को यह सिखाया जाता हैं की हमारे देश को आज़ादी केवल और केवल महात्मा गाँधी द्वारा चलाये गये अहिंसा पूर्वक आन्दोलन से मिली थी। यह कहना न केवल उन ज्ञात और अज्ञात हजारों शहीदों का अपमान हैं जिन्होंने न केवल फाँसी का फन्दा चूमा था अपितु अपनी भरी जवानी ब्रिटिश सरकार की जेलों में काट डाली जिससे बुढ़ापा अत्यंत विषम परिस्तिथियो में बीता। ऐसा ही अन्याय १८५७ के पश्चात सर्वप्रथम स्वदेशी राज और क्रांति का आवाहन करने वाले स्वामी दयानंद सरस्वती के साथ हुआ हैं। जब महात्मा गाँधी ठीक से पैदल चलना भी नहीं सीखे थे उस काल में स्वामी दयानंद द्वारा अपने लेखन, भाषण, पत्र व्यवहार आदि के माध्यम से क्रांति का सन्देश दिया गया था इसी कारण से स्वामी दयानंद को भारतीय क्रांति का अग्रदूत कहा जाता हैं। स्वामी दयानंद वो क्रन्तिकारी सन्यासी थे जिन्होंने १८५७ के पश्चात उस काल में जब अंग्रेजों ने भारतवासियों की आत्मा को बर्बर तरीके से कुचला था जिससे वे अंग्रेजों के विरुद्ध दोबारा से संघर्ष करने का विचार स्वपन में भी न ले, उस काल में सर्वप्रथम स्वदेशी राज्य के लिए उद्घोष किया था। भारत के स्वाधीनता संग्राम में ८०ः क्रांतिकारी आर्यसमाज की पृष्ठ भूमि से थे। यही कारण था कि श्याम जी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह और उनके पुरखे, वीर सुखदेव , ठाकुर रोशन सिंह जैसे हजारों क्रान्तिकारी हँसते हँसते अपने प्राणों की आहुति स्वतंत्रता संग्राम के महान यज्ञ को अर्पित कर गये थे।

कांग्रेस के इतिहास में पट्टाभि सितारामैया ने लिखा हैं

The Aryasamaj movement which owned its birth to the great inspiration of Swami Dayananda Saraswati was aggressive in its patriotic zeal and holding fast to the cult of the infallibility of the vedas and the superiority of the Vedic culture was at the same time not inimical to broad social reform- It thus developed a virile manhood in the nation] which was the synthesis of what was best in its heredity] with what is best in its environment- It fought some of the prevailing social evils and religious superstitions in Hinduism-

स्वामी दयानंद के लेखन द्वारा जनजागरण– स्वामी दयानंद द्वारा राष्ट्र क्रांति के आवाहन के लिए अपने लेखन द्वारा जनजागरण किया गया था जिससे अपूर्ण हलचल उत्पन्न हुई और देश वासियों में चेतना उत्पन्न हुई जिससे भारत देश को स्वतंत्रता के सूर्य के दर्शन हुए थे।

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश (द्वितीय संस्करण) के प्रमाण–

(१) स्वामी दयानंद द्वारा स्वदेशी राज्य को विदेशी राज्य से उत्तम बताना– कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता हैं, वह सर्वोपरि उत्तम होता हैं अथवा मत–मतान्तर के आग्रह रहित , अपने और पराये का पक्षपात शून्य , प्रजा पर माता–पिता के समान कृपा , न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायी नहीं हैं– ८ वां समुल्लास,

(२) स्वामी दयानंद द्वारा विदेशी राज होने के कारण बताना–विदेशियों के आर्यावर्त में राजा होने के कारण आपस की फूट , मतभेद, ब्रहमचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना–पढ़ाना, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषण आदि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचार आदि कर्म हैं, जब आपस में भाई–भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पञ्च बन बैठता हैं– १० वां समुल्लास

(३) स्वामी जी द्वारा बाघेर लोगों द्वारा अंग्रेजों से किये गये संघर्ष की प्रशंसा करना– जब सम्वत १६१४ के वर्ष में तोपों से मंदिर, मूर्तियाँ अंग्रेजों ने उड़ा दी थी तब मूर्ति कहाँ गई थी? प्रत्युत बाघेर लोगों ने जितनी वीरता दिखाई और लड़े, शत्रुओं को मारा परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्री कृष्ण के सदृश कोई होता तो उनके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते– ११ वां समुल्लास

४. स्वामी दयानंद द्वारा अंग्रेजों की मनोवृति का वर्णन– देखो अपने देश के बने हुए जूतों को आफिस और कचहरी जाने देते हैं , इस देशी जूते को नहीं। इतने में ही समझ लो की अपने देश के बने हुए जूतों का भी कितना मान–प्रतिष्ठा करते हैं। उतना भी अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते।११ वां समुल्लास

५. स्वामी दयानंद द्वारा अंग्रेज भक्त ब्रहम समाजियों की कठोर भर्त्सना– इन लोगों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून हैं। ईसाईयों के आचरण बहुत से लिए हैं। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके बदले भरपेट निंदा करते हैं। व्याख्यानों में ईसाई और अंग्रेजों की प्रशंसा भरपेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते। ब्रह्मा से लेकर आर्यवर्त में बहुत से विद्वान हो गये हैं, उनकी प्रशंसा न करके यूरोपियन की ही स्तुति में उतर पड़ना पक्षपात और खुशामद के बिना क्या कहा जाये। ११वां सम्मुलास

६. सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें समुल्लास के अंत में आर्य राजाओं की वंशावली देकर स्वामी दयानंद ने प्राचीन भारत में गौरव, महिमा और समृद्धि का वर्णन कर भारतियों के मन में स्वतंत्रता, स्वाभिमान और गौरव प्राप्ति की दिशा में प्रखर चिंतन की और प्रेरित किया था।

७. हम प्रजापति अर्थात परमेश्वर की प्रजा और परमात्मा हमारा राजा हैं, हम उसके किंकर भृत्यवत हैं, वह कृपा करके अपनी दृष्टि में हमको राज्याधिकारी करे और हमारे हाथ से अपने सत्य न्याय की प्रवृति करावे। सत्यार्थ प्रकाश।

सत्यार्थ प्रकाश–प्रथम संस्करण

१. एक तो यह बात की नोन (नमक) और पोन रोटी (भोजन) में जो कर लिया जाता हैं, मुझको अच्छा मालूम नहीं होता, क्यूंकि नोन बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं, किन्तु सबको नोन आवश्यक होता हैं, और वे मेहनत–मजदूरी से जैसे–तैसे निर्वाह करते हैं उनके ऊपर भी यह नोन कर (कर) दण्डतुल्य रहता हैं, इससे दरिद्रों को क्लेश पहुँचता हैं। अतः कर (टैक्स) लवणादिकों के ऊपर न चाहिए, पौन रोटी से भी गरीबों को बहुत क्लेश होता हैं, क्यूंकि गरीब लोग कहीं से घास छेदन करके ले जायें व लकड़ी का भार (तो) उनके ऊपर कोड़ियों के लगने से उनको अवश्य क्लेश होता होगा, इससे पोन रोटी का जो कर स्थापन करना हैं, सो भी हमारी समझ से अच्छा नहीं– पृष्ठ ३८४–३८५

सरकार कागद (कागज) को बेचती हैं और बहुत सा कागजों पर धन बढ़ा दिया हैं, इससे गरीब लोगों को बहुत कलेश पहुँचता हैं, सो यह बात राजा को करनी उचित नहीं, क्यूंकि इसके होने से बहुत गरीब लोग दुःख पाकर बैठे रहते हैं, कचहरी में बिना धन के कुछ बात नहीं होती। इससे कागजों के ऊपर जो बहुत धन लगाया हैं, सो मुझको अच्छा मालूम नहीं देता। पृष्ठ ३८७

वेदों में स्वतंत्रता प्राप्ति का सन्देश

१. स्वामी दयानंद जी यजुर्वेद ३८/ १४ के भाष्य में लिखते हैं–अखंड चक्रवर्ती राज्य के लिए, शौर्य , निति , विनय, पराक्रम और बलादि उत्तम गुण युक्त कृपा से हम लोगों को यथावत पुष्टकर, अन्य देशवासी राजा हमारें देश में कभी न हो तथा लोग कभीं न हों।

स्वामी दयानंद द्वारा रचित आर्याभिविनय पुस्तक के प्रमाण

१. हे न्यायकारिन! जो कोई हम धार्मिकों से शत्रुता करता हैं, उसको आप भस्मी–भुत करें और विद्या, शौर्य, धैर्य, बल, पराक्रम, चातुर्य, विधि धन, ऐश्वर्य, विनय, साम्राज्य, सम्मति, सम्प्रीति तथा स्वदेश सुख सम्पादन आदि गुणों से युक्त करके हमको सब देह धारियों में उत्तम बनायें और सबसे अधिक आनंद भागी करने, सब देशों में इच्छानुकूल विचरने और आरोग्य देह, शुद्ध मानस बल तथा विज्ञान आदि की प्राप्ति के लिए हमको सब विद्वानों के मध्य

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्रावणी पर्व का महत्व

— प्रोफेसर नरेन्द्र आहूजा विवेक

पाश्चात्य अंधानुकरण की भोगवाद एवं विलासिता में ही अपना विकास समझने वाली एक्स जेन यानी इक्कीसवीं सदी की पीढ़ी अपनी पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति की जड़ों से निरंतर कटती चली जा रही है। बाजारवाद की आंधी में हमारे समाज में प्रवेश कर गए कुछ ऐसे त्यौहार जिनका हमारी संस्कृति से कोई लेना–देना नहीं है। उदाहरण के लिए वैलेंटाइन डे पहले एक दिन से प्रारंभ हुआ अब पूरे सप्ताह तक चलता है। मदर्स डे, फादर्स डे हेलोवीन डे क्रिसमस जैसे कितने ही आयात किए गए त्यौहार। जिनके ना तो हम मनाने का कारण जानते हैं और ना ही अपनी संस्कृति में इन इंपोर्टेड त्योहारों को ढूंढ पाते हैं। ऐसा लगता है जैसे यह त्यौहार केवल हमारे समाज का आर्थिक शोषण करने के लिए हम पर थोप दिए गए हैं। इस कथित विकास की चकाचौन्ध हमें इतना सम्मोहित कर दिया है कि हम अपना भला बुरा भी नहीं देख पा रहे। यहां तक कि हमने अपने त्यौहार पर्व का स्वरूप बदलकर भी उन्हें बाजारवाद के हवाले कर दिया।

पर्व गन्ने की पोरों को जोड़ने वाली गांठ जिसके दोनों और मीठा ही मीठा। अर्थात पर्व समाज को जोड़ने का काम करते हैं। पर्व समाज को आपस में ही नहीं जोड़ते अपितु हमारी पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति की जड़ों से भी जोड़ते हैं। पर्व उत्सव समाज में उत्साह का संचार करते हैं। जब मिलजुल कर हम पर्व मनाते हैं तो समाज में नई ऊर्जा का संचार होता है। लेकिन हम पर्व के यौगिक अर्थ को भूल गए। हमने पाश्चात्य अंधानुकरण की आंधी या फिर अपने स्वार्थ में अपने पर्व के व्यापक विराट योग अर्थ को भूल कर उनके संकुचित स्वरूप को अपना लिया। इतना ही नहीं पाखंड अंधविश्वास अबोधता की दीमक ने हमें अंदर ही अंदर खोखला कर दिया। अपनी संस्कृति को भूलकर पाखंड अंधविश्वास में फंसकर हम अंदर से इतने खोखले हो गए पश्चिमी सभ्यता की आंधी ने हमारे संस्कृति के वटवृक्ष को नीचे गिरा दिया।

अब श्रावणी पर्व को ही ले श्रुति परंपरा से हमने इतना संकुचित कर दिया इसे हम भाई–बहन का रक्षाबंधन त्यौहार समझने लगे। उसमें भी सेक्युलर तड़का लगा कर मुस्लिम भाई द्वारा हिन्दू बहनों की रक्षा के सूत्र की अपुष्ट कहानियां जोड़ दी। इससे इस पर्व के मूल स्वरूप को खो बैठे। इतना ही नहीं अब तो बस साल में एक बार गिफ्ट देकर बहनों की रक्षा के संकल्प को भी छोड़ दिया। यदि बहनों की रक्षा के संकल्प को ही याद रखते तो कोलकाता में ट्रेनी लेडी डॉक्टर अभया के साथ दरिंदगी ना होती और वह आज भी जीवित होती। इससे भी आगे जब रक्षक ही भक्षक बन गए और पूरा तंत्र उन अपराधियों को बचाने लग गया।

रक्षाबन्धन का भाई बहन के रिश्ते को प्रेम के बन्धन को राखी के धागे से बांधकर मजबूत आधार देने वाले पर्व का एक बहुत व्यापक आधार है। इसे 'श्रावणी उपाकर्म' पर्व कहा जाता है। श्रावणी श्रवण श्रुति से सिद्ध हुआ है। श्रुति परम्परा परमपिता परमात्मा द्वारा श्रुति अर्थात वेद ज्ञान ईश्वरीय वाणी विधान चार ऋषियों के माध्यम से समस्त जनों को दिया गया और यह वेद ज्ञान श्रुति परम्परा से आगे बढ़ा।

बरसातों के प्रारम्भ होते ही पर्वतों की गुफाओं, जंगलों में बने आश्रम आदि से स्वाध्याय शील विद्वान सन्यासी वानप्रस्थी मुनि आदि शहरों गावों आदि में आकर सामान्य गृहस्थी लोगों को अपने अनुभव स्वाध्याय उपासना से अर्जित वेद ज्ञान बांटते थे। ज्ञान देना प्रारम्भ करने से पूर्व वेद ज्ञान रक्षा सूत्र या यज्ञोपवीत सामान्य लोगों को धारण करवाया जाता था। यह श्रावणी पर्व के रूप में जाना जाता था। आज भी मन्दिरों गुरुकुलों आदि में श्रावणी पर्व के दिन सामूहिक यज्ञोपवीत कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

श्रावणी पर्व श्रवण और श्रुति से सिद्ध हुआ है। वेद ज्ञान ईश्वरीय वाणी श्रुति परम्परा से ही आम लोगों तक पहुंचाया जाता है। इसीलिए श्रावणी पर्व के दिन वेद रक्षा सूत्र बांधे यज्ञोपवीत धारण करें और सुने हुए वेद ज्ञान के अनुरूप चलने का संकल्प लें और सुने हुए वेद अनुरूप चलने का संकल्प लें 'सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषी' इसी से हमारी संस्कृति की रक्षा हो पाएगी।'वेदो अखिलो धर्म मूलम' वेद को समस्त धर्म का मूल भी कहा गया। सृष्टि कर्ता परमपिता परमेश्वर द्वारा सृष्टि के निर्माण के समय ही सृष्टि में रहने वाले समस्त प्राणियों के लिए एक आचार संहिता नियमावली के रूप में श्रुति परंपरा से ईश्वरीय वाणी कल्याणी वाणी वेदवाणी के रूप में वेद ज्ञान दिया गया। हम सभी सृष्टि में रहने वाले प्राणियों के लिए जानने मानने और पालन करने योग्य ईश्वर द्वारा दी गई आचार संहिता। श्रावणी पर्व से इसी वेद ज्ञान को हम ऋषियों मुनियों सन्यासियों से प्राप्त करके उसकी रक्षा का संकल्प लेते हैं। देव दयानंद ने वेदों का पढना पढ़ाना सुनना सुनाना हम सभी का परम धर्म बताया है। जहां वेद नहीं है वही वेदना है। यदि हम वेद ज्ञान के अनुकूल नहीं चलते हैं तो निश्चित रूप से पहाड़ की ऊंचाइयों से नीचे गहरी खाइयो तक बहुत तेजी से लुढ़कते चले जाते हैं और अपने विनाश को प्राप्त होते हैं। यह तेजी से नीचे लुढ़कने की गति भोगवाद विलासिता पश्चात्य अंधानुकरण के कारण रोमांच तो देती है पर अन्त में हम सभी की जान ले लेती है। 'धर्मो रक्षति रक्षिता धर्म एव हतो हन्ति' अपने धर्म को भूलकर जब हम अपने धर्म को मार देते हैं उसे त्याग देते हैं वह मरा हुआ धर्म हमें मार देता है। यह श्रावणी उपाकर्म पर्व हमें अपनी जड़ों अपने धर्म वेद ज्ञान की ओर वापिस लौटने की प्रेरणा देता है। संस्कृति रक्षा के कारण समस्त भाषाओं की उदगम देव वाणी सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत होने के कारण इसे संस्कृत दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

— एम वी एन विश्वविद्यालय पलवल, 1004 टॉवर 12, आर्किड पेटल्स, सेक्टर 49, गुरुग्राम — 122018, 9878748899

ईसाई मत को छोड़कर हिन्दू बन गए थे

डॉ सी.पी.मेथ्यु- अनगिनत कैंसर रोगियों को स्वस्थ किया

आप डॉक्टर सी.पी.मेथ्यु हैं, जो कोट्टायम मेडिकल कॉलेज के केंसर सर्जरी विभाग के प्रमुख प्रोफेसर और बाद में प्रिंसिपल के पद से सेवानिवृत हुए। 60 वर्ष की आयु में इन्हों ने वह सब भूलने का निर्णय लिया जो कुछ भी उन्होने सीखा था। एक पारंपरिक वैद्य को इन्हों ने अपना गुरु बनाया और उनसे सीखी हुई विद्या से अनगिनत केंसर रोगियों को स्वस्थ किया। इनके रोगियों में कई तो ऐसे थे जिन्हें अमेरिका की मेयो क्लीनिक ने भी जवाब दे दिया था। बाद में इन्हों ने हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया और अपना उपनयन संस्कार भी करवाकर वेदों और उपनिषदों का स्वाध्याय किया। 20 अक्तूबर 2021 को इन का निधन हुआ और सारे अंतिम संस्कार हिन्दू धर्मानुसार हुए। केरल के किसी भी समाचारपत्र ने इनके देहावसान का समाचार नहीं छापा, क्योंकि ये ईसाई मत को छोड़कर हिन्दू बन गए थे और सनातन धर्म अपना लिया। ये होती है इकोसिस्टम की ताक़त.!!

महत्वपूर्ण एवं पठनीय पुस्तक- 'आर्यसमाज और शुद्धि आन्दोलन'

– मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द जी ने 10 अप्रैल 1875 को मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। इसके बाद आर्यसमाज का प्रसार होता रहा और देश विदेश में इसकी इकाईयां स्थापित हुईं और इनके माध्यम से वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज की वैदिक विचारधारा का व्यापक प्रचार हुआ। महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज को 10 स्वर्णिम नियम दिए हैं जिनमें से एक है 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों (सब हिन्दुओं वा सभी मनुष्यों) का परम धर्म है।' आर्यसमाज ने वेदों और उनके सरल व सुबोध भाष्यों का प्रकाशन किया और उसे जन–जन तक पहुंचानें के अथक प्रयत्न किये। वेदों की मान्यताओं व सिद्धान्तों को सरल रूप में जन–जन तक पहुंचाने के लिये हमारे प्राचीन ऋषियों ने वेदों की मान्यताओं पर उपनिषद् एवं दर्शन ग्रन्थों की रचना की। मनुस्मृति एवं सत्यार्थप्रकाश सहित ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका एवं संस्कार विधि आदि ग्रन्थ भी वेदों की मान्यताओं व विचारधारा पर प्रकाश डालते हैं। ऋषि दयानन्द ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धान्त यह दिया है कि वेदानुकूल सत्य सिद्धान्त व मान्यताओं ही ग्राह्य हैं और वेद विरुद्ध मान्यताओं का त्याग करना चाहिये। इन मान्यताओं का पालन करते हुए ऋषि दयानन्द के अनुयायी विद्वानों ने वेदों से सम्बन्धित प्रभूत साहित्य की रचना एवं प्रकाशन करने सहित उसका देश विदेश में प्रचार किया है। हम अनुमान करते हैं कि सन् 1875 से अब तक जितना वेदों पर साहित्य सृजन एवं प्रकाशन का कार्य आर्यसमाज और इसके विद्वानों ने किया है उतना संसार में अन्य किसी संस्था एवं मत, पंथ व सम्प्रदाय ने अपने मतों का नहीं किया। वेद, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के सभी सिद्धान्त एवं मान्यतायें सर्वथा सत्य, तर्कसंगत एवं मानव जीवन की उन्नति में सर्वथा लाभकारी हैं। वेदों के प्रचार से प्राणी मात्र का कल्याण होता है। ऋषि दयानन्द के जीवनकाल में बने उनके प्रमुख अनुयायी एवं विद्वान स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम आर्यमुसाफिर, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज जी और स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी ने वेद विषयक महत्वपूर्ण साहित्य का निर्माण किया और परवर्ती विद्वानों ने भी वेदों के भाष्यों की रचना सहित विविध विषयों पर लाभकारी वैदिक साहित्य की रचना एवं प्रकाशन का महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय कार्य किया है।

महाभारत के बाद की देश व समाज की स्थिति पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि ऋषि परम्परा एवं विद्वानों की कमी हो जाने के कारण देश में अविद्यायुक्त मतों का प्रादुर्भाव हुआ जिनमें उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई। इसके साथ ही कालान्तर में वेदविरोधी–मत भी उत्पन्न हुए जिन्होंने वैदिक धर्मियों का मतान्तरण वा धर्मान्तरण किया जिससे वैदिक मत के अनुयायियों की संख्या निरन्तर कम होती रही और विधर्मियों की संख्या वृद्धि को प्राप्त होती रही। इसी का परिणाम है कि समय–समय पर वृहद भारत वा आर्यावर्त के विभाजन होते रहे। सन् 1947 के बाद भी पाकिस्तान एवं बंगलादेश भारत से अलग होकर नये देश बने जिसका कारण अवैदिक मतों के अनुयायियों का वैदिक धर्म के सिद्धान्तों व विचारधारा को न मानना व उससे दूर हो जाना था। धर्मान्तरण एक ऐसा रोग है जो यदि इसी प्रकार चलता रहा तो एक दिन आर्य हिन्दू जाति के अनुयायी अल्पसंख्यक हो जायेंगे और भारत विधर्मी मत व मतों वाला देश हो सकता है। इस समस्या का एकमात्र समाधान है कि आर्येत्तर मतों के अनुयायियों को वेदों के महान विचारों एवं मान्यताओं का प्रचार कर उन्हें वैदिक धर्म के अन्तर्गत लाया जाये। इस कार्य को आजकल घर वापसी का कार्य भी कहा जाता है जो कि सर्वथा उचित है। ऋषि दयानन्द ने अपने समय में वैदिक धर्म को छोड़कर विधर्मी बने बन्धुओं को पुनः वैदिक धर्म में मिलाने की अनुमति वेदों के ही आधार पर दी थी और इसे शुद्धि का नाम दिया था। इसका एक अर्थ यह भी होता है कि अविद्यायुक्त विचारों वाले बन्धुओं को विद्यायुक्त विचारों वाला बन्धु बनाना। संसार में किसी विधर्मी को वैदिक मत में दीक्षित कर उसे सबसे पहले शुद्ध करने का कार्य स्वयं महर्षि दयानन्द जी ने देहरादून में किया था जहां जन्म से मुस्लिम बन्धु मोहम्मद उमर व उनके परिवार को उनकी प्रार्थना करने पर वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया था। स्वामी दयानन्द के साक्षात् शिष्य पं. लेखराम जी ने भी धर्म प्रचार, असत्य का खण्डन तथा सत्य का मण्डन सहित धर्मान्तरित हो रहे बन्धुओं को वैदिक धर्म की महत्ता बताकर विधर्मी होने से रोका था तथा अनेक विधर्मी बन गये स्वजातीय बन्धुओं को पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि कार्य को बड़े स्तर पर किया और लाखों बिछुड़े हुए बन्धुओं में प्रचार कर उन्हें उनके पुराने धर्म वैदिक धर्म में दीक्षित किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने जीवन में आगरा में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना भी की थी जो आज भी कार्य कर रही है। वर्तमान में इस संस्था के प्रधान युवा संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी हैं। सभी आर्य व हिन्दुओं बन्धुओं का कर्तव्य है कि वह अपने जीवन में सभी श्रेष्ठ वैदिक सिद्धान्तों को धारण करें जिससे कोई बन्धु धर्म का परित्याग कर विधर्मी न बने और जो बन्धु भय व प्रलोभन आदि कारणों से विधर्मी बने हैं उन्हें स्वयं को अपने पूर्व धर्म को ग्रहण करने की प्रेरणा व प्रोत्साहन मिले। आर्यसमाज ने अतीत में शुद्धि का महान् कार्य किया है और इसके लिये बलिदान भी दिये हैं। पं. लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, महाशय राजपाल जी ने धर्म रक्षा के लिये ही बलिदान दिये हैं। आर्यसमाज के शुद्धि आन्दोलन का विस्तृत एवं प्रेरणादायक इतिहास है। शुद्धि के इसी इतिहास को आर्य व देश की जनता के सामने लाने का कार्य युवा ऋषिभक्त विद्वान एवं शिशु रोग विषेयज्ञ डा. विवेक आर्य जी ने "आर्यसमाज और शुद्धि आन्दोलन" पुस्तक लिखकर किया है। यह पुस्तक भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949 बिड़ला लाइन, दिल्ली–110007 सम्पर्क फोन संख्यायें 8368008215, 9718550459 से प्रकाशित हुई है। पुस्तक में 530 पृष्ठ हैं और इसका मूल्य रुपये 500.00 है। जो बन्धु इस पुस्तक को खरीदेंगे वह धन शुद्धि सभा को दान रूप में सहयोग होगा। लेखक डा. विवेक आर्य जी ने इस पुस्तक को स्वामी श्रद्धानन्द जी को समर्पित किया है। इस पुस्तक की प्रस्तावना भारतीय हिंदू शुद्धि सभा के महामंत्री श्री सुभाष दुआ जी ने लिखी है। उन्होंने 'शुद्धि ने इतिहास रचा लहू बहा तब धर्म बचा' विषयक प्रस्तावना–लेख में पुस्तक का परिचय एवं महत्व बताने के बाद लिखा है कि यह पुस्तक अपने गौरवशाली इतिहास की पुस्तक होने के कारण शुद्धि सैनिकों, शुभचिनतकों का बल बनेगी, प्रेरणा बन शुद्धि के आन्दोलन को गति देगी .... युवागण इसे अपना ध्येय बनाएंगे – ऐसी आशा है क्योंकि शुद्धि ही लव–जिहाद, गौ–हत्या, साम्प्रदायिकता, मतान्तरण, राष्ट्रान्तरण जैसी अनेकानेक समस्याओं का सटीक समाधान है। भाविष्य के लेखकों व शोधार्थियों, स्वाध्यायशील, सुधि पाठकों के लिए यह इतिहास ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा–ऐसा अदम्य विश्वास है।

पुस्तक की भूमिका पुस्तक के लेखक डा. विवेक आर्य जी ने लिखी है। उनके द्वारा भूमिका में लिखे कुछ शब्द भी हम यहां उद्धृत कर रहे हैं। वह लिखते हैं – 'आर्यसमाज और शुद्धि आन्दोलन पुस्तक का लेखन 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर किया गया है। शुद्धि सभा की स्थापना 13 फरवरी 1923 को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की प्रेरणा से आगरा में हुई थी। अपने राजनीतिक जीवन से संन्यास लेने के पश्चात् स्वामी जी ने दलितोद्धार और शुद्धि के लिए अपने जीवन को समर्पित कर दिया। आपने शुद्धि यज्ञ में अपना बलिदान देकर आर्यों को निर्भीक होकर शुद्धि यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए प्रेरित किया। शुद्धि यज्ञ में कई दर्जन कार्यकर्ताओं का बलिदान हुआ। सैकड़ों को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक हानि उठानी पड़ी। स्वामी दयानन्द के सिपाहियों ने अनेकों कष्ट सहकर अनेक शताब्दियों से बिछुड़ चुके भाइयों को स्वधर्मी बनाया। यह प्रेरणा उन्हें वेदों के महान् विद्वान्

(शेष पृष्ठ 6 पर)

(पृष्ठ 1 का शुद्धि उपन्यास धारावाहिक लेख का शेष)

सो गया। अखिल तो सो गया लेकिन सलीम के मन में न समाप्त होने वाला विचारों का ज्वार भाटा उठ खड़ा हुआ। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करें। थोड़ी देर में ही एक तरफ उसे सलमा का चेहरा नजर आ रहा था और दूसरे तरफ उसे अखिल की नसीहत लगातार उसके मस्तिष्क पर प्रहार कर रही थी। सारी रात उसकी इसी तरह से बीत गई। सुबह को जब अखिल उठा तो सलीम की आंखें लाल थी। अखिल ने उससे बड़े प्यार से पूछा लेकिन सलीम बातों ही बातों में अपनी बात टाल गया। लेकिन अखिल उसके विचारों को भली भांति जानता था उसकी दुविधा भी उसे पता थी क्योंकि इतना प्रगाढ इतना पुराना प्रेम इतनी शीघ्रता से नहीं मिट सकता। लगभग साढ़े आठ बजे अखिल राजन के लिए नाश्ता ले आया।

तभी नगेंद्र और भूपेश भी राजन को देखने के लिए आ गए थे। अखिल ने संपूर्ण बातें उन्हें भी बताई। दोनों उसकी बातें सुनकर बहुत ही गंभीर और शांत हो गये ...और शून्य में घूर रहे थे। कुछ देर बाद ही भूपेश और नगेंद्र संयुक्त स्वर में बोल उठे –"यार, अखिल माफ कर दो अब हमें रास्ता सुझाओ। हम क्या करें।"

"पहली बात तो भैया यह है कि मैं अब इस काबिल हो गया हूँ कि अपने भाइयों की, दोस्तों की सहायता कर सकूं मैं तुम्हें वचन देता हूं कि दोनों को एक–एक लाख रुपए मैं दूंगा ताकि तुम दोनों अपनी गृहस्थी की जिम्मेदारी ठीक से उठाने के लिए काम धंधा शुरू कर सको।" "नहीं, अखिल! हमें कुछ नहीं चाहिए।" "क्यों नहीं चाहिए? मैं तुम्हें उधार देता हूं जब तुम्हारे पास पैसे हो जाएं तो लौटा देना। क्या बात है?" दोस्त दोस्त के काम नहीं आएगा तो किसके काम आएगा।

अखिल के भी भावावेश में आंखों में आंसू आ गये। वे चारों एक–दूसरे के गले मिलकर रो रहे थे। तभी अचानक अखिल बोला–"अरे ये तो खुशी के आंसू हैं। मेरे दोस्त घर वापस आ गए। इससे अधिक खुशी की बात और क्या हो सकती है। अब चलो कल ही सुबह यज्ञ का आयोजन करते हैं और घर वापसी के लिए शुद्धि करतें हैं। "

"राजन भाई तेरे चेहरे पर अब भी वो रौनक नहीं लौटी जिसको मैं देखना चाहता हूं।" कहते हुए अखिल ने राजन की पीठ थपथपाई। राजन बहुत भावुक हो रहा था। दोस्त केवल अपने आप की शुद्धि से कुछ नहीं होगा हमारे इलाके के बहुत सारे युवक युवती भटक रहे हैं उन्हें वापस घर लौटाना होगा तभी लक्ष्य पूरा होगा। हम तीनों शपथ लेते हैं हम तन–मन–धन से अपने धर्म की रक्षा करेंगे। तभी मस्ती में चारों गाने लगते हैं –"वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्तव्य मार्ग पर डट जाएं। जिस देश जाति में जन्म लिया बलिदान उसी पर हो जाएं।" " तुम्हें एक बात बताऊं अखिल?" प्रार्थना समाप्त होने पर अचानक भूपेश बोल उठा। "हॉं बताओ भूपेश?"

"मुझे इस बारे में ज्यादा तो नहीं पता लेकिन कुछ–कुछ पता है कि ये लोग पंजाब के बार्डर पर जाकर वहॉं के गरीब लोगों को, दुखी लोगों को, और बीमार लोगों को बहुत ज्यादा बड़ी संख्या में इसाई बना रहे हैं। ये वहॉं पर जाते हैं वहॉं के इलाकों का ठीक प्रकार से सर्वे करते हैं। परिवारों के बारे में जानकारी इकट्ठा करते हैं और फिर उन्हें बड़ी आसानी से ईसाई धर्म में ले आते हैं।" "तो एक काम कर तू। किसी भी तरह से अभी गिरजाघर लगातार जाता रह और वहॉं से किसी प्रकार यह पता लगा कि ये किस इलाके में जाकर यह काम कर रहे हैं। बस थोड़ा सा सुराग दे दे फिर मैं उस क्षेत्र में काम करने की कोशिश करता हूँ ,पूरी कोशिश करता हूँ।" "ठीक है । यह काम मुश्किल नहीं है। मैं फादर से अपने तरीके से बात करूँगा।" "मैं इस काम के लिए तुझे दो दिन का समय देता हूँ ।" "ओके हो जाएगा।" हमेशा की भांति रविवार को होने वाली सामूहिक प्रार्थना में भूपेश और नागेंद्र चर्च में प्रेयर करने के लिए पहुँचे । प्रेयर करने के पश्चात भूपेश ने फादर से कहा–" फादर मेरे रिश्तेदार का परिवार और मेरा एक दोस्त पंजाब में रहता है उसकी बहुत इच्छा है कि वह ईसाई धर्म को स्वीकार कर ले तो उसे कहॉं जाना चाहिए ? किससे मिलना चाहिए?"

"माय डियर सन, वहॉं का जो बड़ा चर्च है वहॉं पर जाए और वहॉं पर तो बहुत सारे लोगों ने ईसाई धर्म को स्वीकार कर भी लिया है क्योंकि वहॉं की दुखी जनता इतनी परेशान थी कि उन्हें जीवन बोझ लगने लगा था और वे सब आत्महत्या करना चाहते थे । हमने उन्हें नया जीवन दिया । उनका हौसला बढ़ाया । यीशु ने चमत्कार करके उनके दुख दर्द और गरीबी सब मिटा दी है । अपने दोस्त से कहो वहॉं के बड़े चर्च में जाए । सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। सारी प्रॉब्लम सॉल्व हो जाएगी। यीशु बहुत दयालु है । वह इस पृथ्वी पर दुनिया के दुख दूर करने के लिए ही आए थे । उन्होंने सारे कष्ट सहन करके मानव जाति के पापों को अपने खून से धोया है और सबको सुखी बनाया है।

(शेष अगले अंक में)

(पृष्ठ 5 का शेष)

एवं हिन्दू जाति रक्षक स्वामी दयानन्द से प्राप्त हुई। स्वामी जी ने एक कुशल चिकित्सक के समान दीर्घ काल तक संसार की श्रेष्ठतम आर्य (हिन्दू) जाति के पतन के कारणों का नजदीकी से विश्लेषण किया। इस पतन के निराकरण की अचूक औषधि को 'वेद विद्या' के पुनः प्रचार के रूप में बताया। 'वेदों की ओर लौटो' का नारा देकर पुनरुद्धार का जनजागरण किया। रूढ़िवादी हिन्दू समाज ने शताब्दियों से विधर्मी हो चुके भाइयों की वापसी के हर दरवाजे बन्द कर दिए थे। आपने आर्य जाति पर महान् उपकार करते हुए उन बन्द पड़े दरवाजों को खोल कर शुद्धि विधान को पुनः प्रचलित किया जिससे हिन्दुओं की घटती जनसंख्या पर रोक लगे। स्वामी जी से प्रेरणा पाकर आर्यसमाज ने शुद्धि का कार्य अपने हाथों में लिया और लगभग आधी शताब्दी तक उसे विधर्मियों के साथ साथ अपने ही स्वधर्मी भाइयों का कटु विरोध सहन करना पड़ा। स्वामी दयानन्द के समर्पित सिपाही हंसते हंसते इस विरोध को सहते रहे और कर्तव्य पथ पर अडिग रहे।'

हम अपनी ओर से अपने सभी मित्रों को निवेदन करेंगे कि वह इस पुस्तक को प्राप्त कर इसे आद्योपान्त पढ़े, अपने मित्रों को पढायें और बाद में इसे किसी पुस्तकालय जहां लोग पुस्तकों को पढ़ते हों, भेंट दे दें जिससे इसका अधिक से अधिक प्रचार व सदुपयोग हो सके। मनुष्य का किया हुआ कोई भी कर्म व्यर्थ नहीं जाता, अतः हम इस पुस्तक के प्रचार के लिये जो भी प्रयत्न करेंगे उसका कुछ लाभ हम सभी को अवश्य होगा और इससे हमारी महान् आर्य हिन्दू जाति का भविष्य संवर सकता वा सुरक्षित हो सकता है।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

शुद्धि सम्बन्धी समाचार, सनातन धर्म पर आधारित लेख वट्सअप नम्बर 8368008215 पर भेजें ताकि आगामी अंक में प्रकाशित हो सके। –सम्पादक

मनुष्य की चाल धन से बदलती है...और धर्म से भी बदलती है। फर्क बस इतना हैं कि...जब धन संपन्न होता है, तब अकड़ कर चलता है, और जब धर्म संपन्न होता है, तो विनम्र होकर चलता है। धन क्षणिक है ,मौत के वक्त साथ नहीं जाएगा जबकि धर्म इस लोक और परलोक में भी आपके साथ रहेगा।

(पृष्ठ 3 का शेष)

प्रतिष्ठा युक्त करें। १–१६, २. हे महा धनेश्वर! हमारे शत्रुओं के बल, पराकर्म को(आप) सर्वथा नष्ट करें। आपकी करुणा से हमारा राज्य और धन सदा वृद्धि को प्राप्त हो। १–४३, परोपकारिणी सभा के स्वीकार नामें में स्वामी दयानंद ने यह लिखा हैं की जहाँ तक हो सके न्याय प्राप्ति के लिए सरकारी न्यायालय का द्वार न खट खटाया जाये। स्वामी जी के ऐसे लिखने के पीछे सत्यार्थ प्रकाश में उन्हीं द्वारा लिखे गये इस वाक्य से सिद्ध होता हैं। अनुमान होता हैं की इसलिए ईसाई लोग ईसाईयों का बहुत पक्षपात कर किसी गोरे (अंग्रेज) ने काले (भारतीय)को मार दिया हो, तो भी बहुधा पक्षपात से निरपराधी कर छोड़ देते हैं। १३वां समुल्लास। इस प्रकार से स्वामी दयानंद के लेखन से अनेक अन्य उदहारण दिए जा सकते हैं जो स्वामी दयानंद की अंग्रेजों से भारत को स्वतंत्र करने के लिए आवाहन करने का सशक्त प्रमाण हैं। इन्हीं से प्रेरणा पाकर लाखों भारतवासियों ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया, हजारों ने अँगरेज़ सरकार की जेलों की यात्रा करी, हजारों ने फाँसी का फन्दा चूम कर अपने प्राणों को जन्म भूमि पर न्योछावर कर दिया।

ऋषि दयानन्द चाहते थे मानवों को सत्य से जोड़ना

– महेन्द्र पाल आर्य

ऋषि दयानन्द चाहते थे मानवों को सत्य से जोड़ना–इसी कारण ऋषि ने अपने आर्य समाज के नियम में भी लिखा सत्य को धारण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्दत रहना चाहिए। यह वाक्य ऋषि ने सब के लिए लिखा है जो कोई भी मानव कहलाने वाले हो, जब से मानव ज्ञानवान बन जाता है उसके लिए उचित है सत्य क्या है उसे जाने और मात्र जानने से भी बात नहीं बनेगी, उसी सत्य का ग्रहण करे, क्योंकि यह मानव मात्र के लिए कर्तव्य है। दुनिया में जितने भी समाज है संगठन है किसी ने यह बातें नहीं कही सत्य को धारण करो और असत्य का परित्याग करो। एक ऋषि दयानन्द सरस्वती जी को छोड़ जितने भी महान आत्मा समाज सुधारक आये यह बातें किसी ने भी नहीं लिखी और न अपने अनुयाइयों को कहा सत्य धारण करो असत्य को छोड़ दो। इसका कारण बना जितने भी समाज हैं और संगठन है यह बातें उन्होंने नहीं कही, मूल कारण है जितने भी संगठन है सत्य से बहुत दूर है, सत्य से आगे तक इन लोगों का कोई संपर्क भी नहीं है। अगर यह सत्य की बात करते तो इनका समाज और संगठन का चलना संभव नहीं था, पता यह लगा की यह लोग मानव कहलाकर भी सत्य को ग्रहण नहीं किया।

प्रमाण के लिए धरती पर जितने भी मत और पंथ है सब जगह असत्य और कपोल कल्पित बातें हैं,एक दो प्रमाण दे रहा हूँ। कुरान और बाइबिल और पुराण यह तीनों ग्रंथों में बताया गया है एक मरियम ने कुंवारी अवस्था में किसी पुरुष से बिना मिले ही संतान को जन्म दिया। पुराणो में भी यही कहा गया कुन्ती पुरुष से मिले बिना एक संतान कर्ण को जन्म दिया। इस प्रकार जितने भी मानव द्वारा निर्मित पुस्तकें है इसी प्रकार सत्य से दूर है सृष्टि नियम विज्ञान विरुद्ध मानवता विरुद्ध बाते हैं और सत्य से अनेक दूर हैं। यहाँ तक की ईश्वर कृत ग्रन्थ और मानव कृत ग्रंथों में भी यही भेद है दुनिया वालों ने इसे जानने और समझने का प्रयास नहीं किया। कुरान वालों का कहना है मर जाने के बाद मनुष्य की आत्मा को दो जगह कैद कर दिया जाता है जिन जगह का नाम इल्लिन और सिज्जिन बताया कुरान में, कि जो पुण्य आत्मा है उसे इल्लिन में कैद किया जायगा, और जो दुष्ट आत्मा है उसे सिज्जिन में बन्द किया जायगा। अब इसी आत्मा के लिए गीता में बताया गया आत्मा वह चीज है उसे हवा में उड़ाने की ताकत नहीं, और न आग में जलाने की ताकत है, और न पानी में उसे बहाने की ताकत है, यह बातें इस लिए कही गई है कि आत्मा अनादि तत्व है जैसा परमात्मा अनादि तत्व है ठीक उसी प्रकार प्रकृति भी अनादि तत्व है यह तीन चीज अनादि है, और सम कालीन है आगे पीछे और छोटा बड़ा भी नहीं है। अंतर केवल इतना है कि परमात्मा ज्ञान में पूर्ण है, प्रकृति ज्ञान शून्य है,जीवात्मा में कुछ ज्ञान है और कुछ अज्ञानता है। जीवात्मा अपनी अज्ञानता को दूर करने के लिए परमात्मा का सानिध्य लाभ करना चाहता है।

माह जुलाई 2025 के आर्थिक सहयोगी–

श्री सुभाषचन्द्र दुआ जी की प्रेरणा से प्राप्त दान राशि–

1.	श्री निर्मल झुनझुनवाला जी, यू.एस.ए.	5000/–मासिक
2.	श्री नवाज सेलिमेन्ट जी अमेरिका	3700/– मासिक
3.	श्री नागेश कुमार मित्तल जी गाजीपुर रोड, जिरकपुर मोहाली पंजाब	2000/– मासिक
4.	श्री विजय कपूर जी, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली	1100/– मासिक
5.	श्री सोनू आर्य हरसौला, कैथल, हरियाणा	1100/–मासिक
6.	श्रीमती स्वाति गुप्ता जी बैंगलुरु, कर्नाटक	500/– मासिक
7.	आर्य समाज इन्द्रा नगर, बैग्लुरु कर्नाटक	750/– मासिक

1.	श्री विनय कुमार त्रिवेदी जी पटना	5000/–
2.	श्री समीर मल्होत्रा जी, नई दिल्ली	2100/–
3.	श्री महावीर सिंह जी, हिमलोक, आई.टी.बी.पी., देहरादून	2100/–
4.	श्री अखिलेश कुमार मिश्रा जी, गांधी पथ, वैशाली नगर, जयपुर	1001/–
5.	श्री अनुराग तिवारी जी, गौशाला, कानपुर, उत्तर प्रदेश	501/–
6.	श्री महेश भाई भट्ट जी	250/–

शुभ सूचना

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकें:–

1.	शताब्दी स्मारिका	–	500/– रूपये
2.	आर्य समाज और शुद्धि आन्दोलन	–	500/– रूपये
3.	Arya Samaj & Shuddi Movement	–	300/– रूपये
4.	हिन्दू संगठन (स्वामी श्रद्धानन्द) अंग्रेजी संस्करण	–	100/– रूपये
5.	मैंने ईसाई मत क्यो छोड़ा-आर्यवीर अरूण	–	50/– रूपये
6.	वेदों को जाने	–	300/– रूपये
7.	सनातन को जानें	–	150/– रूपये
8.	मनुस्मृति को जाने	–	120/– रूपये
9.	श्री वाल्मीकि प्रकाश	–	50/– रूपये
10.	Why I Left Christianity	-	75/– रूपये
11.	ऋषि दयानन्द को जानें–	–	70/– रूपये
12.	धर्म बलिदानियों को जानें–	–	80/– रूपये
13.	ऋषि के पुण्य संस्मरण	–	100/– रूपये
14.	बीर बैरागी	–	120/– रूपये
15.	दो बहिनों की बातें (अंग्रेजी)	–	150/–रूपये
16.	श्री हनुमान चरित्रम्	–	50/– रूपये

नोट:- आप यह पुस्तकें 10 प्रतिशत की छूट पर प्राप्त कर सकते है।

शुद्धि कार्य में आर्थिक सहयोग हेतु

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को दी गई राशि पर 80 G के अंतर्गत आयकर छूट उपलब्ध है

खाता संख्या- 0154000100352511,
पंजाब नेशनल बैंक, शाखा कमला नगर, दिल्ली–07,
IFSC-PUNB0015400 पर
सीधे जमा करवा सकते हैं,
तत्पश्चात् फोन न. 8368008215
पर सूचित करें ताकि आपको रसीद भेजी जा सके।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा
BHARTIYA HINDU SHUDHI SABHA

अनमोल–सूक्तियां– **(1) नहि वेदात्परं शास्त्रम्।** –(गरुड़ पुराण) वेदों से उत्तम अन्य कोई शास्त्र नहीं। **(2) पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति।** –(अथर्व. १०/८/३२), ऐ मनुष्यो! परमात्मा के संसार और श्रोत (वेद) को देखो जो कभी नष्ट नहीं होता और न कभी पुराना होता है। **(3) वर्ज्येत मधु मांसं।** –(मनु), मांस और मद्य को छोड़ दे। **(4) यतो अभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः।** –(वैशेषिक), जिस काम से इस लोक और परलोक का सुधार हो वही धर्म है। **(5) सतां सङ्गो हि भेषजम्।**, महान् पुरुषों का सङ्ग ही औषधि है। **(6) न संत्याज्य च ते धैर्यं कदाचिदपि।** –(महाभारत), धैर्य कभी नहीं छोड़ना चाहिए। धीरता और दण्ड जिसके भूषण हों उसे भय किसका।

R.N.I.No. 43084/76
Date of Publication 01-08-2025

Delhi Postal R.No. DL (N) 385/2024-26
Posting Date: 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार
अगस्त 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष

मुस्लिम विद्वानों के मन्तव्य धारावाहिक-3

धार्मिक असहिष्णुता को आर्य समाज के सिद्धांत ही मिटा सकते हैं

शादाब शम्स, अध्यक्ष उत्तराखंड वक्फ बोर्ड

महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान समाज–सुधारक, धार्मिक विचारक और आर्य समाज के संस्थापक थे। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग समाज की कुरीतियों, धार्मिक पाखंड और अज्ञानता को दूर करने में लगाया। उन्होंने वैदिक धर्म की मूल शिक्षाओं को पुनः स्थापित करने का संकल्प लिया और "वेदों की ओर लौटो" का नारा दिया। 1875 में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की जो न केवल धार्मिक पुनर्जागरण का माध्यम बना बल्कि भारत में सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक क्रांति का वाहक भी।

आर्य समाज का निर्माण और उद्देश्य–आर्य समाज का मूलमंत्र है–कृण्वन्तो विश्वमार्यम् यानी संपूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाएं। आर्य समाज का उद्देश्य था वेदों के शुद्ध ज्ञान का प्रचार–प्रसार। मूर्तिपूजा, अंधविश्वास और पाखंड का विरोध। जातिवाद, छुआछूत, बाल विवाह जैसी कुरीतियों का उन्मूलन। स्त्रियों के अधिकार और शिक्षा की रक्षा। स्वदेशी भावना और राष्ट्रप्रेम का विकास।

स्वामी दयानंद जी ने जातिगत भेदभाव, छुआछूत, स्त्री–दमन, बाल विवाह, सती प्रथा आदि का विरोध किया। आर्य समाज ने विधवा पुनर्विवाह, स्त्रियों की शिक्षा और सामाजिक समानता को बढ़ावा दिया। आर्य समाज ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक दृष्टिकोण के साथ पुनर्जीवित किया। डी.ए.वी. कॉलेज और गुरुकुल कांगड़ी जैसे संस्थानों की स्थापना की गई। यहां न केवल वेदों की शिक्षा दी जाती थी बल्कि गणित, विज्ञान और आधुनिक विषय भी पढ़ाए जाते थे।

स्वामी दयानंद का 'भारत भारतियों का है' जैसा विचार युवाओं में देशभक्ति का भाव भरता था। बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी आर्य समाज से प्रेरित थे। आर्य समाज की संस्थाओं ने अंग्रेजों के विरुद्ध स्वदेशी आंदोलन और स्वराज्य की भावना को भी मजबूती दी। स्वामी दयानंद ने धर्म को तर्क और विवेक से जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने धार्मिक ग्रंथों की आलोचनात्मक व्याख्या की और कर्मकांड से हटकर वैदिक जीवनशैली की ओर लौटने का आग्रह किया। आर्य समाज 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) के सिद्धांत को मानता है। इसमें संप्रदाय, जाति या मजहब के आधार पर भेदभाव का कोई स्थान नहीं है।

इस्लाम धर्म के अनुयायियों और आर्य समाज के बीच संभावित संबंध–आर्य समाज के सिद्धांत इस्लाम धर्म के मूल विचारों के भी निकट हैं। वैदिक एकेश्वरवाद में साम्यता इस्लाम का मूल आधार 'तौहीद' यानी एक ईश्वर की उपासना है। इसी प्रकार आर्य समाज भी 'एक निराकार ईश्वर' को ही सर्वशक्तिमान मानता है। यह दोनों समुदायों के बीच वैचारिक सेतु बन सकता है। **इस्लाम में मूर्तिपूजा वर्जित है, और आर्य समाज भी मूर्तिपूजा को धर्म के विरुद्ध मानता है।** आर्य समाज ने भी जन्म आधारित जातिवाद का विरोध किया और कर्म के आधार पर सम्मान की बात की।

महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज का भारत के उत्थान में अतुलनीय योगदान रहा है। आज के समय में जब धार्मिक असहिष्णुता बढ़ रही है स्वामी दयानंद की शिक्षाएं और आर्य समाज का सार्वभौमिक दृष्टिकोण हमें एक नई दिशा दे सकता है– एक ऐसा समाज जहाँ 'धर्म का मतलब कृ मानवता की सेवा।'

शास्त्रार्थ एवं शुद्धि सम्मेलन

ठाकुर विक्रम सिंह जी के 83वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में **19 सितम्बर शुक्रवार 2025** को **'शास्त्रार्थ एवं शुद्धि सम्मेलन'** का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में शास्त्रार्थ करने वाले विद्वान्-विदुषियों का सम्मान किया जाएगा। साथ ही जो महानुभाव शुद्ध हुए हैं या घर-वापसी किया है, उनका भी अभिनन्दन-सम्मान किया जाएगा। इस अवसर पर **''शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी ग्रंथ संग्रह'' (सम्पादक-डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री, पृष्ठ 728) का लोकार्पण (विमोचन) भी सम्पन्न होगा। स्थान-आर्य समाज मन्दिर, ग्रेटर कैलाश, पार्ट -1, नई दिल्ली-110048, समयः प्रातः 10.00 बजे से** 1.00 बजे तक।

शुद्धि एवं शास्त्रार्थ के कार्य में लगे हुए महानुभाव अपना पूरा विवरण सह-संयोजक के पते पर 10 सितम्बर 2025 तक भेजने की कृपा करें।

संयोजक- डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री, अमेठी (उ.प्र.), व्हाट्सअप-7303477301,
सहसंयोजक- श्री लाल सिंह राजावत, व्हाट्सएप-9313939770,
Email:19thsept2025@gmail.com,
Address: A-41, Lajpat Nagar, 2nd Floor, New Delhi-110024

मुद्रक व प्रकाशक-नरेन्द्र मोहन वलेचा द्वारा मयंक प्रिन्टर्स-2199/63, नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7, मो.: 8368008215, 9718550459 से प्रकाशित। सम्पादकः आचार्य गवेन्द्र शास्त्री